डॉ० कविता कुमारी

हिन्दी-विभाग

पी० जी०, द्वितीय सेमेस्टर

विषय - 19 वीं शताब्दी के भारतीय उपन्यास की प्रवृत्तियाँ — ऐतिहासिक उपन्यास —

उपन्यास-साहित्य की वह विधा है, जिसमें किसी भी कालखण्ड विशेष प्रख्यात कथा का चित्रण होता है। किसी भी कालखण्ड विशेष का चित्रण ऐतिहासिक उपन्यास हो सकता है। रंगभूमि, बूँद और समुद्र, झूठा-सच और उत्तरकथा भी अपने युग का प्रामाणिक चित्रण करने के कारण ऐतिहासिक उपन्यास हो सकते हैं, किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास होने के लिए एक अनिवार्य शर्त है — उसकी कथा का ~~प्रख्या~~ प्रख्यात होना, पाठकों उससे पूर्व परिचित होना।

दूसरी ओर हम अपनी पुराकथाओं भी अपना प्राचीन इतिहास मानते हैं, किन्तु विद्वानों का एक वर्ग विदेशी सिद्धान्तों के अनु उसे 'मिथ' अथवा 'मिथ्या' मानता है।

वह उसे अपना इतिहास नहीं मानता।

ऐतिहासिक उपन्यास की सार्थकता केवल उस देश और काल के सुन्दर और आकर्षण चित्रण मात्र नहीं है, वह अपने युग को असीम और निर्बाध काल के साथ जोड़ता है और उसका अपना एक निश्चित प्रतिपाद्य भी होता है, उसके अभाव में कोई कृति महत्व प्राप्त नहीं कर सकती।

हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास एक लम्बी यात्रा तय कर आया है। उपन्यास कुछ ऐसे निष्कर्षों पर पहुँच रहा है जो हमारे समाज के लिए सिद्धान्त मात्र नहीं है वह उनका दैनन्दिन जी
है, जो केवल इहलौकिक का वर्णन करनेवाले सामाजिक सांस्कृतिक उपन्यास नहीं दे सकते हैं। पाठक से वह थोड़ी सात्विक बुद्धि की अ
भी करता है। 'स्वामी विवेकानन्द' ने कहा
इस देश की अपनी स्वतंत्रता के लिए र
जनीति की दलदल में फँसने की आवश्
हीं है, यदि हम अपना सात्विक चरि

प्राप्त कर लेते तो हमारी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जायेगा।"

हिन्दी उपन्यास के विकास के दौर में इतिहास संबंधी एक नये दृष्टिकोण का उदय हुआ। इस कोटि के उपन्यासों में भारतीय इतिहास के उन अध्यायों और घटनाओं को चित्रित किया गया है जिसमें वर्तमान को नयी दिशा और प्रेरणा मिलती है। प्रेमचन्द पूर्व और प्रेमचन्द की ऐतिहासिक और जीवनी-परक ~~घटनाएँ~~ कथाएँ समाज को अपना गौरव और शौर्य स्मरण करने में सफल हुई थी किन्तु उनका जीवन दीर्घकालीन नहीं हुआ।

'वृन्दावनलाल' वर्मा ने अपने उपन्यासों में ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का प्रसार किया। वृन्दावनलाल जी के वक्तव्यों के अनुसार उनके ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के कुछ सामान्य तथा कुछ ... कारण हैं। उन्होंने स्वीकार किया है कि 'सर वाल्टर स्कॉट' के अंग्रेजी उपन्यास पढ़कर

उनके मन में यह बात आई थी कि वे भारत के सम्मान की प्रतिष्ठा के लिए भारत के इतिहास का गौरवपूर्ण पृष्ठों को लेकर वैसे ही उपन्यास लिखेंगे। उन्होंने बुन्देलखण्ड में बसे एक पंजाबी परिवार के यहाँ एक विवाह के अवसर पर वर्मा जी भी आमंत्रित थे, उनके सगे संबधी भी उपस्थित थे। उन लोगों के मध्य होने वाला वार्तालाप वर्मा जी ने सुना जिसमें बुन्देलखण्ड की निर्धनता, पीछड़ेपन की बात कर रहे थे। वर्मा जी ने स्वीकार किया कि यह सब उन्हें अत्यन्त अपमान जनक लगा और उन्होंने संकल्प किया कि वे बुन्देलखण्ड के गौरव को प्रतिष्ठित करने के लिए उपन्यास लिखेंगे। वे अपने कथ्य के लिए प्रमाण जुटाये और थोड़े-बहुत ऐतिहासिक रोमांस की सृष्टि की। यद्यपि उनका क्षेत्र बुन्देलखण्ड तक ही सीमित है किन्तु हम जानते हैं कि अपनी धरती से प्रेम करने वाला लेखक अ[...] स्मृति से भी प्रेम करता है। उन्होंने 'विरा[टा की] पद्मिनी' और 'गढ़ कुंडार' जैसे ऐतिहा[सिक]

Nothing will work unless you do. – Maya Angelou

रोमांस और 'झांसी की रानी' जैसे इतिहास-बोधि[illegible]
उपन्यास भी लिखा। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट है।
लेखक अपने समय से मुक्त नहीं होता। वृन्दावनला[ल]
वर्मा के पास अपना कथ्य है, लेखन है और
लेखन ही उनका संघर्ष है।

'कचनार' उपन्यास इतिहास और प[र]
पर आधारित है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि ऐतिहा[सिक]
है, घटनाएं भी सत्य हैं किन्तु समय और स्थ[ान]
ऐतिहासिकता का आग्रह नहीं है। इसमें एक साथ
नारी कचनार के सतत संघर्षशील तथा संयमित
का चित्रण है। साथ ही दुर्व्यसनग्रस्त गुसाइयों
हीन दशा का भी चित्रण किया गया है। कथा[नक]
केन्द्र धमोनी है जो एक समय राजगोंडों की [...]
थी। कचनार की कहानी के साथ ही राजगों[डों]
की कहानी कहने का भी लेखक का उ[...]
है। 'मृगनयनी' लेखक की सर्वश्रेष्ठ र[चना]
मानी जाती है उसमें ग्वालियर राज्य के म[...]
तोमर और उनकी रानी मृगनयनी की कथ[ा]

cannot change the world, but I can cast a stone across the water to create many ripples. – Mo